PGDSHST

सिंधी–हिंदी–सिंधी अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम
(पी.जी.डी.एस.एच.एस.टी.)

सत्रीय कार्य
2025

(जनवरी 2025 और जुलाई 2025 सत्रों में
प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)

इग्नू
जन–जन का
विश्वविद्यालय

अनुवाद अध्ययन और प्रशिक्षण विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदानगढ़ी, नई दिल्ली–110 068

सिंधी–हिंदी–सिंधी अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम
(पी.जी.डी.एस.एच.एस.टी.)
सत्रीय कार्य 2025

(जनवरी 2025 और जुलाई 2025 सत्रों में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)

कार्यक्रम कोड : पी.जी.डी.एस.एच.एस.टी.

प्रिय विद्यार्थियो,

जैसा कि 'सिंधी–हिंदी अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम' (पी.सी.एस.एच.एस.टी.) की 'कार्यक्रम दर्शिका' में आपको बताया गया है कि इस अध्ययन कार्यक्रम में पढ़ाई के साथ–साथ आपको कुछ सत्रीय कार्य भी करने हैं। आठ पाठ्यक्रमों वाले इस कार्यक्रम के छह पाठ्यक्रमों के अंतर्गत आपको एक–एक सत्रीय कार्य करना होगा और दो पाठ्यक्रम 'अनुवाद परियोजना' से संबंधित हैं। सत्रीय कार्य आपकी आंतरिक परीक्षा है। अतः इन्हें ध्यानपूर्वक और पूरे परिश्रम के साथ करें। प्रत्येक सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किए गए हैं। प्रत्येक पाठ्यक्रम के सत्रीय कार्य आप अपनी सुविधा के अनुसार अलग–अलग प्रस्तुत कर सकते हैं और एक साथ भी प्रस्तुत कर सकते हैं! सत्रीय कार्य प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि इस प्रकार हैं :

पाठ्यक्रम कोड एवं शीर्षक	प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि*	
	जनवरी 2025 में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों के लिए	जुलाई 2025 में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों के लिए
एम.टी.टी.–001 भारतीय भाषाओं में अनुवाद	30.09.2025	31.03.2026
एम.टी.टी.-041 सिंधी–हिंदी अनुवाद : तुलना और पुनःसृजन	30.09.2025	31.03.2026
एम.टी.टी.–042 सिंधी–हिंदी के विविध क्षेत्रों में अनुवाद	30.09.2025	31.03.2026
एम.टी.टी.–043 अनुवाद सिद्धांत और सिंधी–हिंदी–सिंधी अनुवाद परंपरा	30.09.2025	31.03.2026
एम.टी.टी.–044 अनुवाद प्रक्रिया और प्रविधि : सिंधी–हिंदी–सिंधी का संदर्भ	30.09.2025	31.03.2026
एम.टी.टी.–045 हिंदी–सिंधी के विविध क्षेत्रों में अनुवाद	30.09.2025	31.03.2026

*** सत्रीय कार्य जमा कराने की अंतिम तिथि के बारे में अद्यतन जानकारी प्राप्त करने के लिए आप इग्नू वेबसाइट देखिए। आपको सलाह दी जाती है कि आप सत्रीय कार्यों को निर्धारित तिथि के पहले ही भेज दें।**

उद्देश्य : सत्रीय कार्य का मुख्य उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और उसे कहाँ तक व्यवहार में ला सकते हैं। यानी आपको इस योग्य बनाना है कि अध्ययन के दौरान जो जानकारी आपको प्राप्त हुई है उसे अपने शब्दों में विधिवत प्रस्तुत कर

सकें और अनुवाद कार्य में उसे व्यवहार में लाते हुए अच्छा अनुवाद कर सकें। प्रस्तुत कार्यक्रम के अंतर्गत आपको भारतीय भाषाओं में अनुवाद, सिंधी–हिंदी अनुवाद : तुलना और पुनःसृजन के साथ–साथ सिंधी और हिंदी भाषाओं के विभिन्न भाषिक क्षेत्रों में अनुवाद का अभ्यास कराया गया है। इसके अलावा अनुवाद संबंधी सिद्धांतों, प्रक्रिया और प्रविधि से भी परिचित कराते हुए इन भाषाओं में अनुवाद की परंपरा से अवगत कराया गया है।

सत्रीय कार्य करने से पहले कुछ बातें

1) उत्तर के लिए फुलस्केप कागज का ही इस्तेमाल करें।

2) प्रत्येक सत्रीय कार्य के लिए अलग उत्तर–पुस्तिका बनाएँ। इस तरह आपके तीन सत्रीय कार्यों के लिए तीन उत्तर–पुस्तिकाएँ होनी चाहिए।

3) अपनी उत्तर–पुस्तिका के प्रथम पृष्ठ के दाहिने कोने के सबसे ऊपर अपना नामांकन संख्या, पूरा पता लिखें तथा तिथि सहित हस्ताक्षर करें।

4) अपनी उत्तर–पुस्तिका के प्रथम पृष्ठ के बाएँ कोने पर कार्यक्रम का शीर्षक, पाठ्यक्रम का कोड, उसका शीर्षक, सत्रीय कार्य कोड तथा अध्ययन केंद्र का नाम/कोड लिखें।

आपका सत्रीय कार्य इस प्रकार आरंभ होना चाहिए :

कार्यक्रम का शीर्षक :	नामांकन संख्या : ....
	नाम : ....
	पता : ....
	....
पाठ्यक्रम कोड :..	
पाठ्यक्रम का शीर्षक :	हस्ताक्षर :..
सत्रीय कार्य कोड :	तिथि : ....

5) पाठ्यक्रम के कोड तथा सत्रीय कार्य के कोड सत्रीय कार्य पर मुद्रित होते हैं और वहाँ से देखकर लिखे जा सकते हैं। प्रत्येक उत्तर के पहले प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।

6) अपने उत्तर केवल फुलस्केप कागज पर लिखें और उन्हें अच्छी तरह नत्थी कर दें। बहुत पतले कागज पर न लिखें। बायीं ओर 4 से.मी. का हाशिया छोड़ दें। एक उत्तर और दूसरे उत्तर के बीच कम से कम 4 पंक्तियों का स्थान छोड़ें। ऐसा करने से परीक्षक उचित स्थान पर अपनी टिप्पणी दे पाएँगे।

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

- सत्रीय कार्य में दिए गए निर्देशों के अनुसार उत्तर लिखिए। व्यावहारिक प्रश्नों के उत्तर समुचित कोश का उपयोग करते हुए प्रसंग और संदर्भानुसार देने हैं।
- प्रत्येक सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़ें और उसमें यदि कोई विशेष निर्देश दिए गए हों तो उनका पालन करें। सत्रीय कार्य जिन इकाइयों पर आधारित हैं, उन्हें पढ़ लें। प्रश्न के संबंध में महत्वपूर्ण बातों को नोट कर लें, फिर उनको व्यवस्थित करके अपने उत्तर की रूपरेखा बनाएँ।

- जब आपको विश्वास हो जाए कि जो उत्तर आप देने जा रहे हैं संतोषजनक हैं, तब उन्हें साफ–साफ लिखें और जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं उन्हें रेखांकित कर दें।

- अनुवाद के व्यावहारिक प्रश्नों को करते समय 'कोश' का भरपूर प्रयोग करें। विषय एवं संदर्भ का विशेष ध्यान रखें। मलयालम और हिंदी के कथनों की तुलना करें। यह देखें कि अनुवाद से वही अर्थ निकल रहा है जो मूल सामग्री से निकलता है। यह भी सुनिश्चित करें कि आपका अनुवाद लक्ष्य भाषा की उपयुक्त शैली के अनुरूप है, स्रोत भाषा की छाया मात्र नहीं। अनुवाद में मूल लेखन की–सी सहजता लाने के लिए अपनी कल्पनाशीलता और लेखन–क्षमता का उपयोग करें।

- निबंधात्मक प्रश्नों का उत्तर देते समय प्रस्तावना और निष्कर्ष के संबंध में विशेष ध्यान दें। प्रस्तावना संक्षेप में होनी चाहिए। इसमें यह बताएँ कि प्रश्न से आप क्या समझते हैं और आप क्या लिखने जा रहे हैं। निष्कर्ष में आपके उत्तर का सार होना चाहिए। उत्तर सुसंगत और सुसंबद्ध हों। वाक्यों और अनुच्छेदों में परस्पर तालमेल होना चाहिए। उत्तर सत्रीय कार्य में दिए गए प्रश्न से संबद्ध होना चाहिए। यह देख लें कि आपने प्रश्न में निहित सभी मुख्य बातों के उत्तर शामिल किए हैं।

सत्रीय कार्य पूरा करने के बाद यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क) आपके उत्तर तार्किक और सुसंगत हों।

ख) वाक्यों और अनुच्छेदों (Paragraphs) के बीच स्पष्ट क्रमबद्धता हो।

ग) उत्तर सही ढंग से लिखे गए हों तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति उत्तर के पूर्णतया अनुकूल हो।

घ) उत्तर प्रश्न में निर्धारित शब्दों से अधिक लंबे न हों।

ङ) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से वर्तनी और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

च) उत्तर अपने हाथ से लिखें। इसे मुद्रित या टाइप न करें। अपने उत्तर को विश्वविद्यालय द्वारा आपके पास भेजी गई इकाइयों से नकल न करें। यदि आप ऐसा करते हैं तो आपको कम अंक मिलेंगे।

छ) अन्य विद्यार्थियों के उत्तरों से नकल न करें, यदि यह पाया जाता है कि आपने नकल की है तो आपके सत्रीय कार्यों को अस्वीकृत कर दिया जाएगा।

ज) प्रत्येक सत्रीय कार्य को अलग–अलग लिखें।

झ) प्रत्येक उत्तर के साथ उसके प्रश्न की संख्या लिखें।

ञ) सत्रीय कार्य को पूरा करके इसे अध्ययन केंद्र के पास भेज दें। अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य की उत्तर–पुस्तिका को किसी भी स्थिति में **मुख्यालय के विद्यार्थी मूल्यांकन प्रभाग को मूल्यांकन के लिए न भेजें।**

ट) अध्ययन केंद्र में सत्रीय कार्य को प्रस्तुत करते समय निर्धारित प्रेषण एवं पावती कार्ड पर अध्ययन केंद्र से (सत्रीय कार्य प्राप्त किए) प्राप्ति दर्ज करा लें।

ठ) यदि आपने क्षेत्र को बदलने के संबंध में निवेदन किया है तो आप अपने सत्रीय कार्यों को अपने पहले के अध्ययन केंद्र में ही तब तक भेजते रहें जब तक विश्वविद्यालय की ओर से आपको क्षेत्रीय केंद्र बदलने की सूचना नहीं भेज दी जाती।

शुभकामनाओं के साथ,

सिंधी–हिंदी के विविध क्षेत्रों में अनुवाद (एम.टी.टी.–042)
(जनवरी 2025 और जुलाई 2025 सत्रों के लिए)

कार्यक्रम कोड : पी.जी.सी.एस.एच.एस.टी.
पाठ्यक्रम कोड : एम.टी.टी.–042
सत्रीय कार्य : एम.टी.टी.–042/एएसटी/(टी.एम.ए)/2025

अधिकतम अंक : 100

---

1. निम्नलिखित वाक्यों का हिंदी में अनुवाद कीजिए : 10

    1. मयूर एम.ए. सिंधी में दाखिला वरिती आहे।
    2. राजा खे प्रजा जी भलाईअ जा कम करण घुजनि।
    3. बगीचे में गुलनि जा सुहिणा बुटा लगल आहिनि।
    4. सुभाणे स्कूल में संगीत चटाभेटी आहे।
    5. संगीता अजु गुवारि ठाही आहे।
    6. हश्मतराय खे चारि पुट आहिनि।
    7. मूं वटि चारि सौ सिंधी किताब आहिनि।
    8. असांखे मज़मून चटाभेटीअ में बहिरो वठणु घुरिजे।
    9. वर्षा मास्तराणीअ जी नौकरी कंदी आहे।
    10. पोस्ट ऑफीस सुबुह जो डहें बजे खां शाम जो छहें बजे ताई खुलंदी आहे।

2. निम्नलिखित शब्दों का सिंधी और हिंदी अर्थ लिखिए : 5

		सिंधी अर्थ	हिंदी अर्थ
1	कांगु	....	....
2	अलूप	....	....
3	उमाणणु	....	....
4	बिजु	....	....
5	तफ़ावत	....	....
6	तक़रीर	....	....
7	ज़िंदड़	....	....
8	पारखू	....	....
9	अठुटीह	....	....
10	उम्दो	....	....
11	हिरिसु	....	....
12	ख़ल्क	....	....
13	ढुकु	....	....
14	निमाणो	....	....
15	ख़मीस	....	....
16	किफ़ायत	....	....
17	खंधो	....	....

18 गोराबु	....	....
19 मरचूस	....	....
20 मासातु	....	....

3. कुछ शब्द ऐसे हैं जिनके सिंधी और हिंदी में समान पर्याय प्रचलित हैं। उदाहरण के लिए,

उर्दूमूलक शब्द	**सिंधी**	**हिंदी**
मेहमान	मिज़मान	अतिथि

नीचे कुछ इसी प्रकार के शब्द दिए गए हैं। उनके सिंधी और हिंदी पर्याय लिखिए : 5

	सिंधी अर्थ	हिंदी अर्थ
1 उज़्वा	....	....
2 इल्म	....	....
3 उरुज़	....	....
4 काइनात	....	....
5 ज़ालिम	....	....
6 ख़ातिरी	....	....
7 तहज़ीब	....	....
8 सिफत	....	....
9 फितरत	....	....
10 हक़ीकत	....	....
11 अहिसान फरामोश	....	....
12 खिज़मत	....	....
13 नूरचिश्म	....	....
14 लासानी	....	....
15 जमालियात	....	....
16 हुकूमत	....	....
17 बादशाह	....	....
18 खैरियत	....	....
19 हैवान	....	....
20 मज़मून	....	....

4. निम्नलिखित अनुच्छेदों का हिंदी में अनुवाद कीजिए : 7x10=70

(क) शइरु व शाहरी खुदाई ड॒ाति आहे; जंहिंखे धणी अता करे! शइरु अलिहामु आहे। उहाई सची शाइरी आहे जा अंदर मां उछल ड॒ेई ब॒ाहिरु निकिरे ऐं ठोठि दिलियुनि खे सरिसबुजु व शादाबु करे। इन्सान जे मन में वक्ति बि वक्ति केतिराई उमंग, अहिसास ऐं उधमा पैदा थियनि था। हू ज़िंदगीअ जे जुदा जुदा हालतुनि मां लंघे थो। कड॒हिं खुशी त कड॒हिं ग़मु, कड॒हिं दुनिया जी बेवफाई त कड॒हिं वफादारी, कड॒हिं उलिफत त कड॒हिं कुलिफत, कड॒हिं दोसिती त कड॒हिं दुशिमनी, कड॒हिं ऊंधहि त कड॒हिं सोझिरो, कड॒हिं उमीद जे आफिताब जो दीदारु करे थो त कड॒हिं कारनि ककरनि में छिपियल माहिताब करे मायूसु आहे, कड॒हिं मज़िलूमनि मथां जुलिमु थींदो ड॒िसी संदसि दिलि में ज़ालिमनि खिलाफु जोशु व

जौलानु पैदा थिये थो त कडहिं हरीफनि जूं हरिफतूं ऐं सरमाएदारनि जा सितम संदसि दिलि में बग़ावत जी बाहि भड़िकाईनि था, कडहिं महिबूब जो मुखिड़ो पसी अंदर में खुशीअ जी लहिर पैदा थिए थी त कडहिं उनजे फिराक़ में लुड़िक लाड़े थो। कडहिं मिजाज़ी इशिक़ जी लुताफत त कडहिं हक़ीक़ी इशिक़ जी रुहानी राहत, कडहिं कंहिं विधिवा जा गोड़िहा, त कडहिं कंहिं यतीमु उदासु चहिरो, कडहिं रंजु त कडहिं राहत, संदसि मन रुपी महिराण में विचारनि रुपी तरंगूं पैदा कनि थियूं। उहे तरंगूं कंहिं सांचे में ढलिजी बाहिरि निकिरनि थियूं; तडहिं कविता या शइर जो रुप इख़तियारु कनि थियूं।

(ख) वडिड़नि खे बि घुरिजे त हू हवा जो रुखु डिसी पुठी डेई पंहिंजी औलादि जे साम्हूं न पवनि। हालतुनि जे मदेनज़र नंढनि सां रुबाब वारो वरिताउ न करे पियार जो वरिताउ कनि। हू की क़दुरु पाण खे नंढनि जे ख़ियालाति सां ठहिकाईनि। वडिड़नि खे किफायत ऐं क़िनाइत करण जो ढंगु हूंदो आहे। हू चाहींदा आहिनि त संदनि संतानु बि किफायत क़िनाइत सां हले। उहो की कजे जो मींहं वसंदे कमु अचे। माणिहू सवड़ि आहिरु पेर डिघेड़े। अजुकाल्ह घणो करे नंढा हथ फाडु थी पिया आहिनि। वडिड़नि जी ताकीद बावजूद नंढा मनिमानी कनि था। घर वारियुनि जे घुरिजुनि ऐं ऐशु परसितु ज़िंदगी गुज़ारण लाइ, बाहिरियों डेखु वेखु दबिदबो क़ाइमु रखण लाइ वित खां वधीक उडामनि था। के त क़र्जु खणी मर्ज़ में मुबितिला थियनि था, जिनि जी चटी बि वडिड़नि खे भरिणी पवे थी। घर जा वडिड़ा इहो नथा सही सघनि त संदनि औलादु ओफिटू खर्चु करे। अहिड़ियुनि हालतुनि में वडिड़नि ऐं नंढनि जे विच में तनावु पैदा थिए थो, मतिभेद पैदा थियनि था। वडिड़नि ऐं नंढनि खे विचीं वाट वठी पंहिंजे ऐं वडिड़नि जो जीवनु सुखुमय गुज़ारणु घुरिजे ।

के के पुट अहिड़ा पालीसी बाजु थी पिया आहिनि जो हू माउ पीउ खे रेहे रेबे घर जूं सभु चाबियूं उन्हनि खां वठी था छडीनि। पोइ वडिड़नि खे औलाद जो मजू थियणो पवे थो। बडिड़नि खे घुरिजे त हू पंहिंजे हूंदे पंहिंजी समूरी पूंजी औलाद हवाले न कनि, न त खेनि डुखिया डींहं डिसिणा पवंदा। नौजवाननि खे मुंहिंजी गुज़ारिशु आहे त ग़मु खाई वडिड़नि जी खिज़िमत कंदा त संदनि दुआऊं अव्हां खे अडे छडींदियूं।

(ग) दरअसलि सिंधी अदब जो अवाइली दौरु लोक अदब जो दौरु ई हो। झूलेलाल जे उस्तुतीअ में गायल पंजिड़ा, पीरनि फ़कीरनि जे साराह में गायल गीत इन जा मिसाल आहिनि। सिंधी लोककथाऊं लोक जीवन जो अणवंडियो हिसो बणिजी चुकियूं हुयूं। शाह लतीफ़ जहिड़नि शाइरनि इन्हनि खे पंहिजे शाइरीअ जो पारसु छुहाए अमरु बणाए छडियो।

जार्ज स्टेक पंहिजे "सिंधी ग्रामर" (1849 ई.) जे पछाड़ीअ में पंज लोककथाऊं पेशि कयूं, जिनि खे नसुर में लिखियल सभ खां आगाटियूं लोककथाऊं कोठे सघिजे थो। सन 1861 ई. में उधाराम थांवरदास मीरचंदाणीअ राइ डियाच जो क़िसो ऐं बियूं डह आखाणियूं गडे शाया करायूं। हुन लोक कहाणियुनि खे लोकप्रिय बणाइण लाइ 'सिंधु' मख़्जिन में 'शहज़ादी अमुल माणिक' पिणि शाया कराई। इन खां सवाइ 'कोइल डीपचंद' जहिड़ियूं लोककथाऊं पिणि सिंधी लोक अदब में काफ़ी अहमियत रखनि थियूं। अगिते हली दर्सी किताबनि ऐं मुख़्तलिफु रिसालनि में झझो लोक अदबु शाया थींदो रहियो।

इन दौर में सिंधीअ जे उपबोलीअ कछीअ में पिणि काफ़ी अदबु मिले थो। कान्हाजी धरमसिंघ 'काठियावाड़ी साहितु' बिनि भाङनि में 1916 ऐं 1923 ई. में शाया करायो। उन बैदि गौरीशंकर जइशंकर 'कछ देश नी झूनी वार्ताओ' (1924 ई.) शाया करायो, जंहिं में छाएतालीह आखाणियूं डिनल आहिनि। इन में मूमल राणो, उमर मारुई, सुहिणी मेहारु ऐं दोदों चनेसरू वग़ैरह जहिड़ियूं मशहूरु लोककथाऊं पिणि शामिलु आहिनि।

(घ) माउ जी विरध अवस्था थी वञण करे बिन्हीं भाउरनि फ़ैसिलो कयो त हाणे हिकु भाउ फैमिलीअ सूधो हिंदुस्तान में माउ वटि अची रहे। सो राम विलायत खे अलविदा करे, पंहिंजा बार वठी हलियो आयो हुओ। पहिरियां कुझु डींहं त सभु ठीक हलियो, पर पोइ हुन महसूस कयो त संदसि बई नन्ढा बार कुझु कुझु हीसियल पिए नज़र आया। हू पंहिंजे ई घर में अहिड़ी ख़बरदारीअ ऐं सम्भाल सां हलंदा हुआ, जणु कंहिं अज़—ग़ैबी हमले खां बचाउ कन्दा हुजनि। रवाजी बारनि वांगुरु रांदि रूंद करणु, अलमस्त थी घुमण फिरण बदिरां हू सियाणनि बारनि वांगुरु सदाईं या त पंहिंजे कमरे में दर बंदि करे वेही पढ़ंदा हुआ या माउ जे साये में बाहिरि निकिरंदा हुआ। राति जो बि हू ज़ोर करे माउ सां ई गडु सुम्हंदा हुआ। राम जडहिं इन गाल्हि ते घणो ग़ौर कयो त खेसि लगो त संदसि बार पंहिंजीअ पुफीअ पदूअ खां बेहदि डिजंदा हुआ।

चरियाइप में अची जडहिं पदू शयूं फिटी करे भजन्दी हुई या अध अध राति जो ओचितो पंहिंजे बंदि कमरे में रड़ियूं कंदी हुई त बार बिल्कुल दहिलिजी वेंदा हुआ ऐं छिर्क भरे माउ खे चंबुड़न्दा हुआ। पहिरीं जडहिं बार महिने अध लाइ माइटनि सां गडु हिन्दुस्तान घुमण ईंदा हुआ ते संदनि अधु वक्त नानाणानि में गुज़िरी वेन्दो हुआ ऐं बाकी थोरो घणो वक्तु जेको हू पंहिंजे घर गुज़ारीन्दा हुआ, उनमें पदू संदनि लाइ हिकु रौंशो हुई। हिंदुस्तान मां वञण बइदि पदू संदनि ज़हन मां निकिरी वेंदी हुई ऐं विलायत में हूं पंहिंजे कम कार मे लगी वेंदा हुआ।

(ङ) पर हिकु अजीबु लुत्फ़ु आहे, जंहिं में बियनि घणनि लुत्फ़नि जूं सूरतूं ऐं सीरतूं मुयसर आहिनि। उन्हीअ लुत्फ़ में शराब जो नशो आहे ऐं हुस्न जी नाज़ वारी कशशि आहे। उन्हीअ लुत्फ़ में मशगुली बि आहे त विंदुरु बि आहे, उन्हीअ में बेदारी बि आहे त ख्वाबु बि आहे। उन्हीअ वसीले गौरा शंकर ऐं कैलाश जे ऊचाईअ ते परवाज़ नसीबु थो थिए त पाताल में बि टुबी हणिजे थी; उन्हीअ लुत्फ़ में महफिल जो मेडु आहे त बयाबाननि जी एकांत सुञ बि आहे। उन्हीअ लुत्फ़ में सरोद साज़ आहे त अंतरध्यानी बि आहे, उन्हीअ लुत्फ़ में जीअ जी फरिहत आहे त जान जी राहत बि आहे। उन्हीअ लुत्फ़ हूंदे भिखारी बि बादशाह आहे, कंगाल बि मालिकु आहे, बद—सूरत बि सुहिणो जवानु आहे, निसतों बि बलवानु आहे। उन्हीअ लुत्फ़ हूंदे सदियूं ऐं जुग अचियो असां वटि बीहनि, वक्त ऐं जाइ जी हद कान रहे। उन्हीअ लुत्फ़ जे करे हिंदी फिरंगी हिकु थियनि। उन्हीअ लुत्फ़ लाइ न त्यारी खपे, न पूजा आरती। बराबर आहे त निंड जहिड़ो लुकिमो कोन्हे, मौत जहिड़ो मज़ो कोन्हे, पर दुनियवी लफ़्ज़नि में जे हिक खास लज़ीज़ ऐं पाण भुलाईंदड़ विंदुराईंदड़ लुत्फ़ जी कंहिं खे सुधि आहे त उन्हीअ शख्स जी, जंहिं लुत्फ़ु वरितो आहे, किताबनि जे करामती वर्क़नि मां।

(च) इंसान जी जीवत बि मज़े जहिड़ी आहे। लगो वाउ वियो साहु। जीतामिड़े में जीतामिड़ो जीवु बि इंसान खे हलाख करे सघे थो ऐं शायदि मारे बि सघेसि। होडांहं सृष्टीअ जे नज़ारनि, बीठल शयुनि ऐं फिरंदड़ चकरनि डे अखि खणी निहारिजे त विस्मय में पइजी वञिबो त हिननि अगियां इंसान जी मजाल ई कहिड़ी आहे। छा ते थो इंसान बांवरु करे?

इंसान कहिड़ो न लाचारु, कहिड़ो न कमज़ोरु आहे! जे इंसान जे ज़िन्दगीअ जे वारदातुनि ते सरासरी दृष्टी कजे त बि साग॒ियो वीचारु ईंदो। अध उम्र खां मथे या अधु उम्र वञे अणज॒ाणाईअ जी अवस्था में। पेट खे कूतु पहुचाइण में ऐं खटण कमाइण जे लाइक बणिजण में, बाकी अधु उम्र वञे घर जे खिट–पिट, अयाल जे ग॒णितीअ, बुत जे रखोणीअ ऐं आईंदह जे डप ड॒किणीअ में। घणनि खे ब॒ियो की सुझे कीन, सवाइ इन्हीअ जे त सुभां उदरपूरना कीअं कबी शाल पत जी गुज़रे। इन्हीअ फिक्र ई घणनि खे सोढ़हो घुटियो आहे। सौ मां नवे खां मथे इंसाननि खे इहाई चिंता लग॒ल आहे त पाणु कीअं खणां? ब॒िए कंहिं किरत लाइ न फुर्सत अथसि, न चाहिना अथसि।

पोइ छोन चइजे त अहिड़ी ज़िंदगीअ में रखियो छा आहे? मिरूंअ ऐं माण्हूअ में कहिड़ो फर्क थियो? ब॒ई पेट जी पूज॒ा में पूरा आहिनि, पोइ माण्हू छो मइतबरू सड॒िजे? जे मिरूं गार में रहियो ऐं माण्हू महिलात में, त इन्हीअ करे को माण्हूअ महत कोन पातो। इएं त माण्हू मिरूंअ खां वधीक मुहताज ऐ लाचार आहे। जेसीं माण्हूअ खे हकियो तकियो हंधि विहाणो न आहे, तेसीं निंड महाल अथसि, जेसीं पकल ताम न ड॒िजेसि, तेसीं पेट न भरजेसि। पोइ बि जे खाधो हज़मु थिएसि, गर्मी सर्दी बि मिरूंअ जेतिरी न सही सघे। बाकी छा में अची माण्हू मिरूअ खां मथे थियो?

(छ) जे सिंधु जे जल जो महात्म अहिड़ो ऊच कोटीअ जो आहे त सिंधु जी मिटी का घटि न आहे। सिंधु जी मिटी मर्ज़ लाइ माजूनु आहे, मन लाइ मौज आहे। सिंधु जे पटनि भटनि में कुशादगी आहे, ताज़गी आहे, नवाण आहे। सोढ़ह सिंधु में थिए कान, सिंधु में सदाईं सुकार आहे, जिते सोढ़ह कान्हे सुकर आहे, उते सबुरु आहे, मन खे शान्ती आहे, सूंहं लाइ आब॒िलाशा आहे, सिन्धी थोरे खटिए घणी बरकत जा आदी आहिनि, हुननि खे माया जी उहा ममता न आहे जा चित खे चलाए। थोरी महिनत सां सिंधु में हरिको माण्हू सुखियो सताबो रही सघे थो। हद खां ब॒ाहिरि मेड़ण ऐं बखील थियण सिंधियत में रवा न आहे। सिंधीअ वटि जे कुझु गड॒ु थियो त सदाविरत में वियो, महिमान नवाज़ीअ में खर्चु थियो। ड॒ूराहनि ड॒ेसावरनि में सिंधियुनि जूं खैराती संस्थाऊं हलनि पयूं। सिंधी कमी ऐ कासबी, वणजारा ऐं सर्राफ, मारूअड़ा ऐं मीर, कलाल ऐ कामोरा, सिन्धु जे मिटीअ मां उपिजियल, सिंधु जे जल मां तृप्त थियल, ग़ैरत जा धणी आहिनि ऐं तोकल पसंद आहिनि। हुननि खे पंहिंजे रब॒ ऐं ड॒ुथ, भत ऐं भोर पराए पुलाअ खां घणो वधीक था वणनि। ब॒ियनि जे खाधे पीते, चोड़ण माणण ते हननि खे रशक नथो जाग॒े, हुननि जो अंदर नथो जले। सिंधु जी मिटी छूत छात या वेर ऐं तइसुब लाइ कातिल ज़हरु आहे; सिंधीअ लाइ 'चीटीअ एं कुंचर में समु ड॒िसण भग॒वान', बिल्कुलु सवली ग॒ाल्हि आहे। सिंधु जा दहकानी, ओठी ऐं गेंवार कंहिं कंहिं वेर उन्हीअ उताहीअं ते था रसनि उन्हीअ गहिराई में था झाती पाईनि, जंहिं उताहीअं ऐं गहिराईअ लाइ योगी ऐं सिध पुरुष पाण था ग॒ारीनि ऐं तपस्या कनि। उठ ते चढ़ी सिंधु जे पटनि सां सफर करणु माना मन खे ईश्वर जे पासे खींचणु, एकांत जे आलाप खे कन ड॒ेई बुधणु, कड॒हिं कड॒हिं सुधु बुधु बि विञाए विहणु। सिंधु जीजल ऐं मिटीअ जे मेलाप खे शक्ति आहे त चित खे चरियो करे, नासवंत दुनिया मां मन खे हटाए ऐं हक़ीक़ी मंज़िल ड॒ांहुं विख वधाराए। सिंधु जे चपे चपे ते संतनि जो वासो आहे, सिंधु जे नगरनि ऐं टकरनि ते सवा लख पीरनि जी आस आहे।

5. निम्नलिखित अनुच्छेद का सिंधी में अनुवाद कीजिए : 10

बालक प्रकृति की एक अनमोल रचना है। उसकी मासूम एवं मीठी बातें सुनकर संसार एक अनोखा आनंद पाता है। वही बालक आगे चलकर देश का भावी कर्णधार एवं भविष्य का निर्माता बनता है और समाज, देश एवं राष्ट्र का दायित्व निभाता है। अतः बच्चों को

राष्ट्रीय चेतना की दिशा में प्रशिक्षित किया जाए तो वे आगे चलकर अपना दायित्व अच्छी तरह से निभा सकेंगे। यह काम साहित्यकारों, शिक्षकों और अभिभावकों को करना है।

बच्चों के चरित्र निर्माण में साहित्य की महत्वपूर्ण भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। अतः बच्चों को ऐसा साहित्य मिलना चाहिए जो न केवल उनके चरित्र एवं मानसिक विकास में उनका मददगार बने बल्कि राष्ट्रीय चेतना की दिशा में भी प्रशिक्षित करे। बाल साहित्यकारों ने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रचुर मात्रा में साहित्य लिखा है। भारत की अन्य भाषाओं की तरह सिंधी में भी ऐसी रचनाएँ लिखी गई हैं।

सिंधी में लिखे गए बाल साहित्य में एक ओर आनंद तथा उल्लास के उद्देश्य वाली रचनाएँ मिलती हैं तो दूसरी ओर बच्च्चों में राष्ट्र–प्रेम, राष्ट्र–भावना, राष्ट्रीय एकता, अखंडता, मातृभूमि के लिए प्रेम, भारतीय संस्कृति के प्रति आदर, विश्व मंगल की कामना से ओत–प्रोत रचनाएँ भी मिलती हैं। इस तरह से देखा जाए तो भारत की विभिन्न भाषाओं के बाल साहित्यकारों की तरह बच्चों को राष्ट्रीय चेतना की दिशा में प्रशिक्षित करने का दायित्व सिंधी बाल साहित्यकारों ने भी पूरी निष्ठा से निभाया है। सिंधी के बाल साहित्यकारों ने साहित्य की लगभग सभी विधाओं में अपने–अपने ढंग से राष्ट्रीय चेतना को जगाने का काम किया है।

***